क्या है प्रांतीय पर्यावरण संरक्षण कार्यशाला ?

प्रांतीय पर्यावरण संरक्षण कार्यशाला में शाखा दायित्वधारियों को बताया जाता है कि पर्यावरण की चुनौतियॉ हमें एवं आने वाली पीढ़ियों को किस प्रकार हानि पहुँचा सकती हैं। पर्यावरण संरक्षण सुधार के विभिन्न कार्यक्रम कौन से हैं एवं उन्हे किस प्रकार किया जाऐ। वित्त पूर्ति की क्या व्यवस्था होगी।

प्रांत क्या करें ?

सभी प्रांतो से निवेदन है कि –

1. अपने प्रांत में एक दिवसीय प्रांतीय पर्यावरण संरक्षण कार्यशाला का आयोजन करें।
2. कार्यशाला दोपहर भोज तक समाप्त हो जाती है।
3. इसका आयोजन किसी भी स्कूल के एक कमरे में भी किया जा सकता है।
4. कार्यशाला में प्रांत की सभी शाखाओं के अध्यक्ष/सचिव एवं पर्यावरण संरक्षण प्रभारी/ सेवा प्रमुख को बुलाना चाहिए।
5. भारत विकास परिषद् की पर्यावरण संरक्षण सुधार योजनाओं के प्रचार–प्रसार के लिए प्रेस कान्फ्रेन्स भी कार्यशाला के साथ ही रखी जा सकती हैं।
6. प्रांत में आयोजित दायित्व बोध कार्यशाला, अभ्यास वर्ग या अन्य प्रशिक्षण शिविर में 45 मिनिट का सत्र पर्यावरण संरक्षण सुधार पर रखा जा सकता है।

पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रमों से लाभ

1. देश दुनिया के पर्यावरण में सुधार कर के हम स्वयं अपना एंव अपनी आने वाली पीढ़ी की जीवनचर्या में सुधार कर सकेंगे।
2. शिक्षकों, विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं आम नागरिकों में सकारात्मक संदेश के साथ शाखा अपनी पहचान बना सकेगी।
3. स्कूलों, समाज एवं गांव/शहर में परिषद् की अच्छी छवि का निर्माण होगा।
4. उस गांव/शहर में परिषद् की नई शाखा एवं नये सदस्य बनाने में सुगमता रहेगी।
5. पर्यावरण संरक्षण के कार्यक्रमों को लागू करने में शाखा पर कोई व्यय भार नहीं पड़ता, बल्कि कुछ धन की बचत ही हो जाती है।

पृथ्वी को महाविनाश से बचाने के लिए एवं अपनी आने वाली पीढ़ी को सुरक्षित करने के लिए हम सभी को अपने जन्म दिवस पर एक पौधा लगाकर उसे बड़ा करना होगा, वर्षा जल से अपने ट्यूबवेल को रिचार्ज करना होगा, पानी के बुद्धिमत्तापूर्ण उपयोग की आदत डालनी होगी, साईकिल का प्रयोग बढ़ाना होगा, पोलिथिन का प्रयोग कम करने के लिए कपड़े का थैला लेकर चलने का अभ्यास करना होगा, डिस्पोजल गिलास, कटोरी, चम्मच, प्लेट आदि का उपयोग कम करना होगा, आवश्यकता न होने पर लाईट, पंखा, कम्प्यूटर, ए.सी. को बंद करने की आदत डालनी होगी, अपनी बाईक/कार को समय से सर्विस कराना होगा, कार पूल को बढ़ावा देना होगा। हम सब के छोटे–छोटे प्रयास इस पृथ्वी को रहने के लिये और अधिक सुरक्षित और सुन्दर बनाने में मददगार होंगे।

भारत विकास परिषद्

भारत विकास भवन, बी.डी. ब्लाक, पावर हाउस के पीछे, पीतमपुरा, दिल्ली–34

दूरभाष : 011–27313051, 27316049 फैक्स : 011–27314515

ई मेल : bvp@bvpindia.com वेबसाइट : www.bvpindia.com

भारत विकास परिषद् के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए परिषद् की वेबसाइट www.bvpindia.com को देखें।

Printed by : Yashika Printers # 9818383198 / August 2015

सम्पर्क ✦ सहयोग ✦ संस्कार ✦ सेवा ✦ समर्पण

भारत विकास परिषद्

Bharat Vikas Parishad

पर्यावरण संरक्षण

भारत विकास परिषद् प्रकाशन

स्वस्थ–समर्थ–संस्कारित भारत ❖ Swasth-Samarth-Sanskarit Bharat

पर्यावरण संरक्षण

पर्यावरण संरक्षण प्रबंधन वर्तमान में संपूर्ण मानव जाति के लिए सर्वाधिक चुनौतीपूर्ण विषय बनता जा रहा है। **यू.एन.ओ.** द्वारा विश्व के शीर्ष 1100 मौसम वैज्ञानिकों द्वारा तैयार करायी गयी रिपोर्ट **'द ग्लोबल एनवियर्नमेन्ट आउटलुक'** चेताती है कि सन 2032 में विश्व की आधी आबादी पर जल संकट होगा, एक तिहाई आबादी को पेट भर अनाज नहीं होगा, विश्व की 70 प्रतिशत भूमि शहरीकरण का शिकार हो जाएगी तथा विश्व की 12 प्रतिशत पेड–पौधे एवं पशु–पक्षियों की प्रजातियाँ विलुप्त हो जाएंगी।

इसी प्रकार विश्व प्रसिद्ध **मैसाचुसेट्स इन्स्टीट्यूट ऑफ टैक्नोलोजी** के वैज्ञानिक भी चेतावनी देते हैं कि अगले 80 वर्ष में मुम्बई, कोलकाता, चेन्नई, अंडमान–निकोबार, गोवा, दुनिया के बहुत खूबसूरत शहर वेनिस सहित अनेक शहरों का बड़ा हिस्सा पानी में डूब जाएगा, इससे दुनिया के बहुत बड़े चावल उत्पादक क्षेत्र भी जल समाधि ले लेंगे, इससे भयंकर खाद्यान्न संकट पैदा होगा, भयंकर तूफान एवं चक्रवात आयेंगे, बेमौसम बरसात होगी, ऋतुओं का क्रम बदलेगा, मलेरिया, डेंगू, हैजा जैसी बीमारियों के फैलने के साथ ही अनेक नई बीमारियां पैदा होंगी जिनका ईलाज हमारे पास नहीं होगा।

पृथ्वी पर आने वाले आसन्न संकट के निवारण हेतु भारत विकास परिषद् ने देशभर में फैली अपनी शाखाओं के माध्यम से निम्न कार्यक्रम चला रखे हैं –

1. **हरित भारत बालगोकुलम** – इस योजना के अन्तर्गत देशभर के स्कूल/कॉलेजों में इस नाम के पर्यावरण क्लब बनाये जाते है। स्कूल में 4फीटX8फीट का एक फ्लेक्स बोर्ड भी लगाया जाता है। जिसमें **पर्यावरण संरक्षण** के प्रतिदिन जीवन में अपनाये जाने वाले सरल उपाय लिखे होते हैं। इन्हे रोज़ विद्यार्थी पढ़ते हैं एवं जीवन में अपनाने की आदत डालते हैं।

2. **ट्री गार्ड में पौधारोपण** – जन सहयोग से लोहे के पेन्ट किए गए ट्री गार्ड बनवाकर मंदिर, अस्पताल, स्कूल, कॉलेज, पार्क, मोक्ष–धाम एवं घरों के बाहर उन में पौधारोपण कराया जाता है। जहाँ पौधा लगता है उनसे पौधे की देखभाल एवं सुरक्षा का शपथ–पत्र भरवाया जाता है एवं आर्थिक अंशदान लिया जाता है। जनसहयोग से चलने वाली इस योजना में लगे 95 प्रतिशत पौधे जिंदा रहते हैं, बड़े होते हैं। ट्री गार्ड पर 1फीटX1फीट की लोहे की प्लेट लगायी जाती है, जिस पर भारत विकास परिषद् एवं दानदाता का नाम लिखा जाता है।

3. **गुल्लक वितरण** – जन्म दिवस पर पौधारोपण हेतु गुल्लक स्कूलों में विद्यार्थियों को वितरित की जाती है। गुल्लक बहुत सुंदर है, इस पर स्टिकर लगा है – मुझे अपने जन्मदिन पर एक पेड़ लगाना है, इसलिए इस गुल्लक में 2 रू. रोज बचाना है। विद्यार्थी के जन्म दिवस पर उसके घर के बाहर या स्कूल में लोहे के ट्री गार्ड में पौधारोपण कराया जाता है। ट्री गार्ड की व्यय पूर्ति गुल्लक में एकत्र रू. 730 से हो जाती है। ट्री गार्ड पर लगी प्लेट पर भारत विकास परिषद्, विद्यार्थी का नाम, जन्मदिवस, स्कूल का नाम लिखा होता है।

4. **तुलसी पौधा वितरण** – तुलसी एक औषधीय पौधा है। तुलसी अनेक बीमारियों में विभिन्न प्रकार से प्रयोग में लाया जाता है। तुलसी पौधा धार्मिक, सामाजिक, वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। पौधे गमले (परिषद् का नाम लिखकर) सहित वितरित किये जाते हैं और उसके साथ इसके महत्व के विषय में भी जानकारी दी जाती है

5. **थैली छोड़ो–थैला पकड़ो अभियान** – स्कूलों में विद्यार्थियों से पुराने कपड़े एकत्र कर निःशक्तजनों से कपड़े के थैले बनवाये जाते हैं, उन पर भारत विकास परिषद् का नाम स्क्रीन से पेन्ट कराकर स्कूलों, पार्कों, चौराहों आदि पर निःशुल्क वितरित किया जाता है।

6. **रूफ टॉप वाटर हार्वेस्टिंग** – के अन्तर्गत घर/ऑफिस में छत के वर्षा जल को ट्यूबवेल में जोड़कर उसे रिचार्ज कराया जाता है। इस हेतु परिषद् प्लम्बर्स को ट्रेनिंग देकर उनसे यह कार्य कराती है।

7. **विवाह पर पौधारोपण** – पुत्र – पुत्री के विवाह के पुनीत अवसर पर लोगों से आग्रह करके पौधारोपण कराया जाता है। इस हेतु आमंत्रण पत्र छपवाये गये हैं जो उन लोगों को दिये जाते हैं जो परिषद् सदस्य को शादी का आमंत्रण देने आते हैं।

8. **खाओ–पीओ–फेंको के विरूद्ध अभियान** – डिस्पोजल कटोरी, प्लेट, गिलास, चम्मच का प्रयोग कम करने के लिए पत्रक परिषद् द्वारा छपवाये गये हैं जो परिषद् सदस्यों द्वारा उन लोगों को दिए जाते हैं जो उन्हें शादी का कार्ड देने आते हैं।

9. **मोक्ष धाम सुधार हेतु** – परिषद् की शाखाओं द्वारा बिजली/गैस के शवदाह गृह सहित पौधारोपण आदि अनेक कार्य मोक्षधामों पर किए जाते हैं।

10. **पर्यावरण रैली एवं संगोष्ठी** – स्कूलों में संगोष्ठी कर विद्यार्थियों को पर्यावरण की दशा एवं दिशा समझायी जाती है, फिर उनकी सहायता से क्षेत्र में रैली निकाली जाती है।

इसके अलावा जल संरक्षण के सरल उपायों के पत्रक वितरण, बिना दाना डाले पक्षियों के लिए 12 महिने भोजन व आवास हेतु पंचवटी पौधारोपण योजना, स्वच्छता अभियान हेतु घर के कचरे से वर्मीकम्पोस्ट खाद निर्माण, कांग्रेस घास उन्मूलन अभियान, जन्म दिवस कार्ड में पर्यावरण संरक्षण बचाने का संदेश, पर्यावरण पर आधारित निबंध, भाषण, गीत, चित्रकला क्विज, मेहंदी, रंगोली आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन जैसे अनेक कार्यक्रम देश भर में भारत विकास परिषद् की शाखाओं द्वारा चलाए जा रहे हैं।

शाखाओं के लिए पर्यावरण संरक्षण लक्ष्य

सभी शाखाओं हेतु इस वर्ष केन्द्रीय कार्यालय दिल्ली द्वारा पर्यावरण संरक्षण के लक्ष्य निम्न प्रकार रखें गये हैं। सभी शाखाओं से अपेक्षा है कि वे इन्हें पूरा करने का प्रयास करें।

• हरित भारत बालगोकुलम	न्यूनतम 5
• ट्री–गार्ड (जिस पर 1'X1') की प्लेट लगी होनी चाहिए, भारत विकास परिषद् एवं दानदाता का नाम लिखा होना चाहिए,	न्यूनतम 50
• पौधारोपण	न्यूनतम 200
• तुलसी वितरण	न्यूनतम 200
• गुल्लक वितरण (जन्म दिवस पौधारोपण योजना)	न्यूनतम 100
• वन भ्रमण (पर्यावरण चेतना यात्रा)	न्यूनतम 1
• पर्यावरण संगोष्ठी	न्यूनतम 1
• सांस्कृतिक सप्ताह में पर्यावरण संरक्षण पर निबन्ध, भाषण, गीत, क्विज, चित्रकला, मेहंदी, रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन आदि।	शाखा की सुविधानुसार

प्रांतो के लिए पर्यावरण संरक्षण लक्ष्य

1. एक दिवसीय प्रांतीय पर्यावरण कार्यशाला का आयोजन।
2. प्रांतीय दायित्व बोध कार्यशाला, अभ्यास वर्ग या प्रशिक्षण शिविर में पर्यावरण संरक्षण पर एक 45 मिनिट का सत्र।